प्रेस विज्ञप्ति

दुनिया भर में बायोटेक फसलों में रिकार्ड वृद्धि

भारत में बायोटेक उत्पादन क्षेत्र में 400 फीसदी की बढ़ोतरी

नई दिल्ली, जनवरी 13, 2005 : सन् 2004 में बायोटेक फसलों ने कई रिकार्ड बनाए। अव्वल तो दुनिया भर में इसका उत्पादन क्षेत्र 20 फीसदी बढ़कर 81 मिलियन हेक्टेयर (200 मिलियन एकड़) हो गया जो हेक्टेयर पैमाने पर दूसरी सबसे बड़ी वृद्धि कही जा रही है। आज ही इंटरनेशनल सर्विस फॉर द' एक्वीजिशन ऑफ एग्री–बायोटेक एप्लीकेशन्स (आईएसएएए) के संस्थापक–अध्यक्ष क्लाइव जेम्स द्वारा निर्मित और जारी एक रिपोर्ट के अनुसार सन् 2004 में इस फसल के लिए 13. 3 मिलियन हेक्टेयर यानी 32.9 मिलियन एकड़ भूमि का इजाफा हुआ।

कथित अध्ययन के अनुसार विगत साल (सन् 2004) 17 देशों में लगभग 82.5 लाख खेतिहरों ने बायोटेक फसलों को अपनाया। सन् 2003 में 18 देशों के कुल खेतिहरों की तुलना में यह संख्या 12.5 लाख अधिक है। यहां अधिक उल्लेखनीय यह है कि इन किसानों में अधिकांश विकासशील देशों के हैं। वस्तुतः ऐसा पहली बार हुआ जब औद्योगिक देशों (6.1 मिलियन हेक्टेयर) के मुकाबले विकासशील देशों (7.2 मिलयिन हेक्अेयर) में बायोटेक फसल के खेतों में निरपेक्ष बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

इस संदर्भ में क्लाइव जेम्स का तो यह मानना है कि "औद्योगिक एवं विकासशील दोनों अर्थव्यवस्थाओं में छोटे–छोटे, खासकर संसाधनहीन किसानों, के द्वारा बायोटेक फसलों को अपनाया जाना इस बात का सबूत है कि ये आर्थिक रूप से लाभदायी, पर्यावरण–मित्र, स्वास्थ्यकर एवं सामाजिक हित में हैं। इतना ही नहीं, सन् 2004 में हमने इस फसल का दायरा तेजी से विस्तृत होते हुए देखा क्योंकि बहुत से देशों ने इसे अपनाया और हेक्टेयर पैमाने पर तो इसने नया मील का पत्थर कायम किया।"

सन् 2004 में 'बायोटेक मेगा–कंट्रीज़' यानी 50,000 हेक्टेयर या उससे अधिक क्षेत्र में बायोटेक फसल उगाने वाले देशों की संख्या 10 से बढ़कर 14 हो गई। पराग्वे, मेक्सिको, स्पेन एवं फिलीपीन्स इस क्षेत्र के प्रमुख आगंतुक हैं। इस संदर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि बायोटेक फसल के व्यापक उत्पादक देशों की संख्या अब 5 से बढ़कर 8 हो गई है। आज इनमें अमेरिका (कुल वैश्विक क्षेत्र का 59 प्रतिशत), अर्जेन्टिना (20 प्रतिशत), कनाडा (6 प्रतिशत), ब्राजील (6 प्रतिशत), चीन (5 प्रतिशत), पराग्वे (2 प्रतिशत), भारत (1 प्रतिशत) एवं दक्षिण अफ्रीका (1 प्रतिशत) प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त मेक्सिको, स्पेन एवं फिलीपीन्स, उरुग्वे, आस्ट्रेलिया एवं रोमानियां भी अब मेगा–कंट्रीज़ की सूची में शामिल हैं।

भारत में बीटा कॉटन के उत्पादन का यह तीसरा साल है परंतु इसने इसी अवधि में सर्वाधिक साल–दर–साल वृद्धि दर दर्ज कर ली है। यहां 400 प्रतिशत उत्पादन बढ़ गया है तथा फिलहाल 5 लाख हेक्टेयर में बायोटेक कॉटन का उत्पादन हो रहा है। वस्तुतः दुनिया के किसी अन्य देश के मुकाबले भारत में सर्वाधिक, लगभग 90 लाख हेक्टेयर में इस कॉटन का उत्पादन होता है। सन् 2004 के आंकड़े बताते हैं कि 3 लाख छोटे–छोटे किसान औसतन 2 हेक्टेयर में बीटा कॉटन की खेती कर रहे हैं तथा उन्हें इसके बीज में ही अंतर्निहित कीट सुरक्षा तंत्र का पूरा लाभ मिला है। बीटा काटन के इस संकर संस्करण को सन् 2005 में और अधिक लोगों द्वारा अपनाए जाने की उम्मीद है।

भारी पैमाने पर इस किस्म के बीजों एवं फसलों के अपनाए जाने की घटना इस बात के पक्का सबूत हैं कि किस प्रकार दुनिया भर, खासकर विकासशील देशों, के खेतिहरों को बायोटेक फसलों का लाभ नजर आने लगा है और उनका विश्वास बढ़ता जा रहा है। फिलीपीन्स के एक किसान एडविन परलौम ने साफ तौर पर कहा कि सन् 2003 के उत्तरार्द्ध में स्वीकृत बायोटेक कॉर्न का उत्पादन कर वह अपने परिवार की बेहतर देखभाल करने लायक हो गया है।

उसने कहा, "मेरी बेटी हमेशा मुझसे कहती है कि पापा हम अपना घर बड़ा बनाएं। बायोटेक कॉर्न से मेरी पैदावार प्रति हेक्टेयर 3.5 टन से दोगुनी यानी 7.5 टन हो गई जिसके परिणामस्वरूप अपनी बेटी की इच्छा पूरी करने के लिए मेरे पास पूरा पैसा हो गया।"

यहां एक और मजेदार बात यह है कि श्री परलौमन को प्राप्त परिणामों से विकासशील देशों में बायोटेक फसलों के उत्पाद–क्षेत्र में 35 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि औद्योगिक क्षेत्रों में यह वृद्धि 13 फीसदी मात्र रही। इस प्रकार पहली बार विकासशील देशों ने वैश्विक उत्पादन क्षेत्र में एक तिहाई से अधिक की वृद्धि दर्ज की। इसके मद्देजनर श्री जेम्स का तो यह मानना है कि आने वाले दिनों में बायोटेक फसलों की स्वीकृति और उसके उत्पादन को पांच प्रमुख विकासशील देश यानी चीन, भारत, अर्जेन्टिना, ब्राजील एवं दक्षिण अफ्रीका बहुत प्रभावित करेंगे।

जेम्स ने अपना मंतव्य देते हुए आगे कहा, "बायोटेकनॉलाजी के आरंभिक दावे–वादे पूरे हुए। अब यह शीघ्र प्रसार के एक नए युग में कदम रखने को है जिसके परिणाम आने वाले दिनों में साफ दीख पड़ेंगे जबकि विकास की दर और तेज होगी।"

आज जबकि मक्के की दो किस्मों को युरोपीय संघ में निर्यात करने की स्वीकृति मिल गई है तथा चीन में बायोटेक फसलों का निरंतर विकास के लक्षण हैं तो दुनिया भर में इसके प्रति आशा की एक लहर स्वाभाविक ही है। सन् 2005 के मध्य तक ही चीन द्वारा बायोटेक धान को स्वीकृति मिलने के आसार हैं जो दुनिया भर में किसी ऐसी फसल अपनाए जाने की पहली और क्रांतिकारी घटना होगी। लोग बायोटेक फसलों, खाद्यान्नों एवं चारों को स्वीकार करने एवं उनकी खेती करने में कतई नहीं हिचकेंगे।

आई एस ए ए ए का तो यह आकलन है कि इस दशक के अंत तक दुनिया के 30 देशों में 15 करोड़ हेक्टेयर भूमि पर 15 करोड़ किसान बायोटेक फसलों का उत्पादन करेंगे।

फोण्डाजियोन बसोलेरा ब्रांका (इटली) एवं रॉकफेलर फाण्डेशन (अमेरिका) के वित्तीयन से तैयार इस रिपोर्ट के सारांश के लिए देखें - www.isaaa.org.

इंटरनेशनल सर्विस फॉर द' एक्वीजिशन ऑफ एग्री–बायोटेक एप्लीकेशन्स (आईएसएएए) दरअसल कोई लाभ कमाने वाली संस्था नहीं है। इसे निजी एवं सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों के समर्थन प्राप्त हैं। दुनिया भर में फैला इसका नेटवर्क बायो–टेकनॉलॉजी के माध्यम से भूख एवं गरीबी दूर करने हेतु कृतसंकल्प है। खासकर विकासशील देशों में तो इसकी भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। आज इसे बायोटेक ज्ञान का अंतराष्ट्रीय मंच कहा जा सकता है। और विगत 25 सालों में एशिया, लातिन अमेरिका एवं अफ्रीका के देशों में आईएसएएए के संस्थापक–अध्यक्ष क्लाइव जेम्स ने खेती के क्षेत्र में शोध एवं विकास के मुद्दों को लेकर जो प्रयास किए वे वाकई सराहनीय हैं। आज श्री क्लाइव बायोटेक फसलों एवं वैश्विक खाद्य सुरक्षा को लेकर मुहिम छेड़े हुए हैं।

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें :
अचल पॉल, रिशु मोंगा, गुलाब सिंह
ई. लेक्सिकन पब्लिक रिलेशन्स एण्ड कॉर्पोरेट कन्सलटेन्ट्स लि.
मोबाइल : 9810162377, 9811658305, 9899406030